ISSN : 0975-3664
RNI : U.P.BIL/2012/43696

शोध धारा
SHODH DHARA

कला और मानविकी का त्रैमासिक, पीयर रीव्यूड, रेफर्ड एवं यू.जी.सी. केयर लिस्टेड, शोध जर्नल
[A Quarterly Peer Reviewed, Reffered, UGC Care Listed, Bi-lingual (Hindi & English) Research Journal of Arts & Humanities]

Year : 2021 **Month : March** **Vol. 1**

प्रधान संपादक
Chief Editor
डॉ0 (श्रीमती) नीलम मुकेश
Dr. (Smt.) Neelam Mukesh

60

संपादक
Editor
डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय
Dr. Rajesh Chandra Pandey

प्रकाशक : शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन), उ0प्र0
Published by : Shaikshik Avam Anusandhan Sansthan, Orai (Jalaun) U.P.

शोध-धारा
SHODH-DHARA

वर्ष	: 2021, मार्च
Year	: 2021, March
	Vol.1, अंक 1
	कला और मानविकी का त्रैमासिक, पीयर रीव्यूड, रेफर्ड एवं यूजीसी केयर लिस्टेड शोध जर्नल
	A Quarterly Peer Reviewed, Reffered, and U.G.C. Care Listed Research Journal of Arts & Humanities
प्रकाशन	: डॉ० राजेश चन्द्र पाण्डेय (महासचिव) शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन) उ०प्र०
Publisher	: **Dr. Rajesh Chandra Pandey** (General Secretary) Shaikshik Avam Anusandhan Sansthan, Orai (Jalaun) U.P.
मुद्रक	: कस्टमर गैलरी, मौनी मंदिर, उरई (जालौन), उ०प्र०
Printer	: **Customer Gallery,** Mauni Mandir, Orai (Jalaun) U.P.

अंशदान/Subscription :

एक अंक One Volume	: 100/-
व्यक्तिगत पंचवर्षीय Individual Five Year	: 2000/-
व्यक्तिगत आजीवन Individual Life Membership	: 3000/-
संस्थागत पंचवर्षीय Institutional Five Year	: 2500/-
संस्थागत आजीवन Institutional Life Membership	: 5000/-

(Duration of Life Membership is 10 year)

नोट : सभी प्रकार के भुगतान 'संपादक शोधधारा' उरई के नाम से देय है।

Note : All payments relating to this journal shall be made by draft in favoure of the "***Sampadak Shodh Dhara***", Payble at **Orai.**

The Journal does not ask for publication charges in any form.

कार्यालय : डॉ० (श्रीमती) नीलम मुकेश
प्रधान संपादक, शोध-धारा, १०७५, बैंक कॉलोनी, जालौन रोड, उरई (जालौन), उ०प्र०
: डॉ० राजेश चन्द्र पाण्डेय
संपादक, शोध-धारा, २६२, पाठकपुरा, उरई (जालौन), उ०प्र०

Office : **Dr. (Smt.) Neelam Mukesh**
Chief Editor, Shodh-Dhara,1075, Bank Colony, Jalaun Road, Orai (Jalaun) 285001,U.P.
Mobile : 9450109471
: **Dr. Rajesh Chandra Pandey**
Editor, Shodh-Dhara, 262, Pathakpura, Orai (Jalaun) 285001, U.P.
Mobile : 9415592698(W), 9198204835, Email:shodhdharajournal2005@gmail.com

डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय (महासचिव, शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन)) मुद्रक, प्रकाशक और स्वामी द्वारा कस्टमर गैलरी, उरई (जालौन) से मुद्रित करवाकर शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन) से प्रकाशित। संपादक –डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय

Note : * The views expressed in the published articles are their writers own. The agreement of the Editorial Board or the Shodh Pratisthan is not necessary.* Disputes, If any shall be decided by the court at Orai (Jalaun) U.P.

सम्पादकीय

संघर्षो के दौर में शोध की आवश्यकता...

मानव जीवन विसंगतियों एवं संघर्षो से भरा हुआ है। संघर्ष चतुर्दिक हैं। कुछ संघर्ष परिस्थितिजन्य है और कुछ संघर्ष मानवजन्य। कभी–कभी मानव चाहे अनचाहे कुछ ऐसे कृत्य कर बैठता है, जिससे उसका जीवन ही संघर्षमय हो जाता है। विगत् एक वर्ष से हम कुछ ऐसा ही अनुभव कर रहे हैं। कोरोना रूपी वैश्विक महामारी ने विश्व में मनुष्य की इसी छवि को प्रमाणित किया है। प्रतिस्पर्द्धात्मक वातावरण में शक्तिशाली बनने की महत्वाकांक्षा पाले हुए मानव अब महामारियों के दौर में जीवन जीने को विवश हो चुका है। मानव की नकारात्मक नियति का प्रमाण कोरोना रूपी वैश्विक महामारी है। हालांकि यह भी बहुत बड़ा सत्य है कि इस वैश्विक आपदा की घड़ी में मानव की अदम्य इच्छा शक्ति एवं साहसिक रूप ही विश्व की रक्षा भी कर रहा है। जहाँ तक इस वैश्विक आपदा की घड़ी में भारत राष्ट्र की स्थिति का प्रश्न है तो एक बात तो यह तथ्य निश्चित है कि इस राष्ट्र की मूल संवेदना अत्यंत सशक्त है। रहन–सहन, आचार–विचार, खान–पान जैसी प्रबल आदतों के आधार पर हमने इस वैश्विक आपदा की चुनौती को पूरी तरह स्वीकारा है। आज जब हम इस संघर्षशील परिस्थिति में एक नये मोड़ तक पहुँच गये हैं, तब हमें इस बात पर ध्यान देना होगा कि विभिन्न शोधों एवं मूल्यांकनों द्वारा उन बिंदुओं की तलाश की जाय जिससे भविष्य में भीषण महामारियों का निषेध एवं बचाव सुनिश्चित किया जा सके। ध्यातव्य है कि शोध की प्रक्रिया को और अधिक प्रामाणिक एवं प्रभावशाली बनाना होगा।

जहाँ तक शोध की प्रामाणिकता का प्रश्न है तो शोध धारा इस दिशा में विगत् डेढ़ दशक से भी अधिक समय से अनवरत् गतिशील है। हम निरंतर इस बात के लिए प्रयासरत् हैं कि उच्च गुणवत्ता युक्त शोध को आप सभी के समक्ष रख सकें।

अपनी इस यात्रा में विभिन्न प्रकार के संघर्षो का सामना करते हुए हम पुनः एक नये पड़ाव पर आ पहुँचे हैं। यह साठवाँ (६०) अंक आप सभी के समक्ष अत्यंत उत्साह के साथ प्रस्तुत है। इस अंक में कुल ४७ शोध आलेख एवं १ कृति विमर्श संकलित है। विगत् की भाँति पुनः आपके स्नेह, परामर्श की प्रबल आंकाक्षा के साथ....

प्रधान संपादक

ISSN : 0975-3664 RNI : U.P.BIL/2012/43696

शोध धारा
SHODH-DHARA

कला और मानविकी का त्रैमासिक, पीयर रिव्यूड, रेफर्ड एवं यूजीसी केयर लिस्टेड शोध जर्नल (साहित्य, कला और संस्कृति पर केंद्रित)
(A quarterly peer reviewed, referred, U.G.C. care listed reseach journal of Art & Humanities)

Year 2021 March Vol. 1

अनुक्रम Contents

शीर्षक	लेखक	पृ०सं०
शोध आलेख		
✦ **हिन्दी साहित्य**		**1-167**
१. भूमंडलीकरण और समकालीन हिंदी कविता	डॉ. शिवजी उत्तम चवरे	1- 6
२. 'आज बाज़ार बन्द है' : वेश्यामुक्ति की पहल	डॉ. मिनी जोर्ज	7-12
३. आधुनिक हिन्दी कविता में अंतर्विषक संदर्भ	डॉ० मनोज कुमार स्वामी	13-17
४. शिवमूर्ति के 'कुच्ची का कानून' में प्रतिबिंबित ग्रामीण चेतना	डॉ० उमा देवी	18-22
५. कंचन सेठ की कविताओं में सामाजिक यथार्थ	डॉ० गोरखनाथ तिवारी	23-26
६. स्त्री अस्मिता की आदर्श कथाकार कमल कुमार	डॉ० शशिकांत मिश्र	27-33
७. भाषा : एक विमर्श	डॉ० अम्बिका उपाध्याय	34-40
८. तमस उपन्यास में देश विभाजन की त्रासदी	विनोद कुमार मौर्य	41-47
९. पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में राजेश जोशी तथा ज्ञानेन्द्रपति की चिंता (भू–पर्यावरण के विशेष संदर्भ में)	डॉ० सुनीता शर्मा निम्रता	48-56
१०. लीलाधर जगूड़ी के काव्य 'नाटक जारी है' में राजनीतिक चेतना	डॉ० विवेकानन्द पाठक	57-64
११. ब्रज का लोकसाहित्य	डॉ० सूर्यकान्त त्रिपाठी	65-70
१२. बुन्देली लोक काव्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना	सर्जना यादव	71-75
१३. हिंदी और मराठी की गज़ल में सामाजिक विषमता की सशक्त अभिव्यक्ति	डॉ० नवनाथ गाड़ेकर	76-80
१४. देहरी से देह तक पहुँचती : शैलजा पाठक की 'कमाल की औरतें'	डॉ० नीतू परिहार	81-87
१५. परम्परागत ढाँचे से पृथक स्वातंत्रयोत्तर भारत के जीवन का जीवंत दस्तावेज : 'राग दरबारी'	ज्ञानेन्द्र मणि त्रिपाठी	88-92
१६. नई कहानी आंदोलन के अंतः सूत्रों की पड़ताल	डॉ० राम किंकर पाण्डेय	93-98
१७. २१वीं सदी में मीडिया और हिन्दी का वैश्विक विस्तार	डॉ० अरूण कुमार चतुर्वेदी	99-103
१८. इक्कीसवीं शताब्दी के नवगीत में स्त्री विमर्श के विविध आयाम	सीमा यादव	104-108
१९. 'एक न एक दिन' : रिश्तों के मर्म पर अर्थतंत्र का निर्मम	मृत्युंजय सिंह	109-116

हिन्दी साहित्य

ISSN : 0975-3664, RNI : U.P.BIL/2012/43696
SHODH-DHARA ; Mar 2021; Vol. 1; I? 81-87

देहरी से देह तक पहुँचती : शैलजा पाठक की 'कमाल की औरतें'

डॉ० नीतू परिहार

सहआचार्य, विभागाध्यक्ष, हिन्दी–विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया वि०वि०, **उदयपुर, राजस्थान**

(प्राप्त : २० नवंबर २०२०)

Abstract

शैलजा पाठक की कविताएँ बिल्कुल अलग अंदाज की हैं। रानीखेत, अल्मोड़ा में जन्मी शैलजा अपनी कविताओं में प्रकृति से बहुत जुड़ी हैं। उनकी कविताओं में धरती, आकाश, फूल–पत्ते और भी बहुत कुछ हैं जो उन्हें प्रकृति से जोड़े हैं। वे बचपन की यादों और बातों को जोड़ कर एक नया संसार रचती हैं। वर्तिका नंदा के शब्दों में कहूँ तो–"वैसे कविताएँ निजी दस्तावेज की तरह ही होती हैं।" शैलजा की भी कविताएँ बहुत निजी लगती हैं।

शैलजा पाठक ने 'कमाल की औरतें' शीर्षक से कुछ कविताएँ लिखी हैं। जो कुछ इन कविताओं में लिखा है, उसे 'कमाल का' कहने को मन करता है। औरतों को कितना महसूस किया है शैलजा ने ये उनकी कविता कहती है। ये औरतें ही हैं जो अपनी खराब तबीयत को टालती रहती हैं, अपनी परेशानियों को पालती हैं पर कहती नहीं। इनका ध्यान हर छोटी चीजों पर रहता है; जैसे–खाना, कपड़े, घर की सफाई, बीमार की दवाई आदि सब का हिसाब दिमाग में रहता है। पर कुछ स्थूल चीजों पर नहीं जाता इनका ध्यान जैसे–जैसे अपना मन अपने सपने/अपनी बातें अपने दुख–दर्द/ये इन सबको घर के कूड़े–कचरे के साथ/बाहर वाले घूरे पर डाल आती हैं।

शैलजा पाठक औरतों की कई ऐसी खूबियाँ बताती हैं, जिन पर अक्सर हमारा ध्यान नहीं जाता। वह औरतों के बचपन, जवानी और बुढ़ापे को गौर से देखती हैं और बताती हैं कि वह क्या–क्या खोती और पाती चली जाती हैं। शैलजा पाठक की कविताएँ एक मर्दवादी सोच को चुनौती देती हैं। शैलजा की कविताएँ यह चाहती हैं कि औरतें स्वयं को पहचाने।

Figure : 00 **References : 20** **Table : 00**

Key Words : शैलजा पाठक का काव्य शिल्प, काव्य में लोक संवेदना

शैलजा पाठक की कविताएँ बिल्कुल अलग अंदाज की हैं। रानीखेत, अल्मोड़ा में जन्मी शैलजा अपनी कविताओं में प्रकृति से बहुत जुड़ी हैं। उनकी कविताओं में धरती, आकाश, फूल–पत्ते और भी बहुत कुछ हैं जो उन्हें प्रकृति से जोड़े हैं। वह बचपन की यादों और बातों को जोड़ कर एक नया संसार रचती हैं।

वर्तिका नंदा के शब्दों में कहूँ तो–"वैसे कविताएँ निजी दस्तावेज की तरह ही होती हैं।"[1] शैलजा की भी कविताएँ बहुत निजी लगती हैं। अम्मा को, अम्मा की बातों को याद करती हैं। याद आता है वो बचपन जब छोटे भाई की हथेली पर अम्मा तेल से गोला बना कहती हैं ये लड्डू, दूसरी पर पेड़ा। भैया खा जाता झट से लड्डू–पेड़ा। अब माँ याद आती हैं और मन चाहता है हथेलियाँ मीठी हो जाएँ एक बार फिर से–

सूना आँगन––––हवा में हिलती कुर्सी

खाली हथेलियों का खारापन
हमारी दोनों मुठ्ठियाँ तुम्हारे सामने हैं

.....

तुम नदी–सी समा रही हो हथेलियों में
बस एक बार दे दो ना वही लडडू–पेड़ा[२]

पर जानते हैं बच्चे भी माँ कहाँ वापस आ पाएगी। माँ की यादें बच्चों के दिल में हमेशा रहती हैं, बच्चे के लिए माँ से बढ़कर कब कुछ हो पाता है। स्त्रियों को जितना अपने बच्चों से प्यार होता है उतना ही अपने गहनों–कपड़ों से भी होता है। शादी में मिली चीजों को वे कभी भूल नहीं पाती। हम सब अपनी नानी–दादी से सुनते आए हैं उनकी शादी के किस्से, शादी में दिए गए गहनों की कहानियाँ। अम्मा बहुत चाव से बताती कि कैसे सारा गाँव उचक कर देख रहा था जब भाई ने सवा किलो की करधनी चढ़ाई। कितना मोह होता है हम स्त्रियों को अपने माँ से मिले गहनों का। माँ का सारा प्यार–दुलार लिपटा रहता है हार और पाजेब में।

लेकिन इन गहनों की खनक भी तभी तक है जब तक पहने रहें। पड़े गहने गठरी से ज्यादा कुछ नहीं। जो अंगूठी पहने अम्मा पूरे आँगन में इठलाती थीं, वही आँगन बिलख उठा–

आखिरी अँगूठी उतारने पर
कुछ ना कहीं आँगन बिलख उठा
गहनों की एक पोटली है ––– गठरी भर अम्मा।[३]

अम्मा थी तो जाने कितनी कहानियाँ थीं, कितने किस्से थे। बक्से में पड़े सिक्के में खनक थी, अलमारी में कपड़े के रंगो में त्यौहार बंद थे। जाने क्या–क्या दबा है कपडों के बीच में। अम्मा नहीं हैं तो गहनों–कपड़ो से भरा लदा है घर लेकिन–

उदास संदूक में बंद कपड़े उदास से हैं, कमर की करधनी और पाजेब गूंगे
सिकड़ी कितनी थी––– सब उलझी सी है, सारे हिसाब गड़बड़ाए हैं अम्मा।[४]

माँ के बिना घर, घर कहाँ रहता है, रहती हैं सिर्फ चार दीवारी। माँ से मायका है, वैसे ही अम्मा से घर। शैलजा, अम्मा के घर को बता कर बताती हैं अम्मा की अहमियत, अम्मा का सर्मपण, अम्मा का ममत्व और अम्मा का लगाव। अन्यथा चार दीवारें तो कहीं भी हो सकती हैं। लेकिन घर तो उसे अम्मा ही बना सकती हैं।

ये अम्मा की बेटियाँ जब पीहर आती हैं तो कितना कुछ करना चाहती हैं। मायके आई सखियाँ मिलकर सारा बचपन फिर से जी लेना चाहती हैं। वे भूल जाना चाहती हैं कुछ दिन जीवन की परेशानियों को, छुपा जाना चाहती हैं अपने हाथों के छाले को, मन के घावों को। करना चाहती है –

चल सखी चूड़ियाँ बाँट लें
मिला ले तेरी हरी में मेरी लाल
बीच में लगा कर देख ये बैंगनी–सफेद
कुछ नई में पुरानी मिलाकर पहनते हैं
अब जो आये हैं नैहर चल खूब खनकते हैं।[५]

पीहर आ कर बन जाना चाहती हैं अम्मा की गुड़िया। पीहर–सा सुख कहीं और कब मिला है

चाहे कितना भी घर खूबसूरत और सुविधाजनक हो। जो बात माँ के घर में है, वो माँ के बिना महल में भी नहीं। शैलजा माँ को, माँ से जुड़ी हर चीज को बहुत लगाव और चाव से याद रखती है और कविता में पिरोती है।

शैलजा पाठक ने 'कमाल की औरतें' शीर्षक से कुछ कविताएँ लिखी हैं। जो कुछ इन कविताओं में लिखा है उसे 'कमाल का' कहने को मन करता है। औरतों को कितना महसूस किया है शैलजा ने ये उनकी कविता कहती है। "औरत स्वतंत्र निर्णय लेने से कतराती है। अपनी इच्छा और स्थितियों के टकराव से लहूलुहान होती रही। वह अपनी तकलीफजदा हालत में कभी खुद को संभालती तो कभी अवसाद का शिकार होती रही। वह अपने पल्लू में सब छुपा जाती है।"[६] जब साड़ी पहनने वाली स्त्रियों के बारे में सोचूँ तो याद आता है उनका पल्लू से हाथ पोंछना, आँसू पोंछना, बच्चे की आँख में कुछ गिर जाए तो उसी पल्लू से आँख सेंकना, थाली में गर्द नजर आ जाए तो झट से पोंछ देना, खेल कर घर आए बच्चे के हाथ पोंछ लेना और भी जाने क्या–क्या स्त्रियों के पल्लू में बँधा होता है –

जमाने भर के दाग धब्बे को
एक पूरा दिन खोंसे रही
अपनी कमर के गिर्द
अब देर तक अपना पल्लू साफ करेगी औरतें
कि पति के मोहक क्षणों में
मोहिनी–सी, नीले अम्बर सी तन जायेंगी
ये कपड़े को देर तक धोती नजर आएंगी
मुश्किल के पाँच दिनों से ज्यादा मैले कपड़े
जमाने का दाग।[७]

औरतें अपने घर को छोड़ पराये घर को अपना बनाती हैं। अपना बनाते–बनाते भूल जाती हैं, सब उस घर का। चार दीवारी में कैद हो जाती है लेकिन कल्पनाओं की यात्राओं में दूर–दराज तक घूम आती हैं, भाग–भाग कर निपटा आती हैं ढेरों काम। कल्पना में ही नाप आती हैं समन्दर की गहराई, पर्वतों की ऊँचाई और बीमार पिता के माथे को सहला आती हैं। शायद इसलिए अपनी चप्पलों को देर तक धोती हैं। ताकि –

ये देर तक धोती हैं
अपने सपने अपने ख्याल अपनी उमंगें
इतनी कि सफेद पड़ जाए रंग
ये औरतें
अपनी आत्मा पर लगी तमाम खरोचों को भी छुपा ले जाती हैं
और तुम कहते हो–––––
कमाल की औरतें हैं–––––
इतनी देर तक नहाती हैं।[८]

ट्रेन में सफर करती औरतें भी गाड़ियों से तेज भागती हैं। भागती ट्रेन में जैसे पीछे छूटते जाते हैं पेड़, वैसे ही इन औरतों के सपने हैं। ये सपने जो इनकी जिन्दगी के लिए अहम थे, सब पीछे छूटते

जाते हैं। लेकिन ये उदास नहीं होती बल्कि ये उन्हें आँखों में भर लेती हैं। औरतों कि खासियत है कि जीवन में कैसी भी परिस्थितियाँ हों, ये अपना फर्ज नहीं भूलती। बच्चे को दूध पिलाना हो, सफर में किसी भी चीज की जरुरत हो, झट से बैग में से निकाल देती हैं। घर में सारे काम करती ही हैं, सफर में भी औरतें सजग रहती हैं। कहा भी गया है–"औरत काम करते–करते भी गा–बतिया सकती हैं। वह एक साथ बहुत तरह के काम कर सकती हैं, क्योंकि शोधों का निष्कर्ष है कि उनके दायें और बायें मस्तिष्क एक साथ काम करते हैं।"[९] बाकी सब सो रहे होते हैं और ये उस समय भी एक क्षण नहीं गवाती–

तुम्हारी आँख झपकते ही
ये धो आती हैं हाथ–मुँह
माँज आती है दाँत
खंखाल आती हैं दूध की बोतल
निपटा आती हैं अपने दैनिक कार्य
इन जरा–से क्षणों में
ये अपनी आँख और अपना आँचल
तुम्हारे पास ही छोड़ आती हैं।[१०]

औरतें माँ बनते ही सीख जाती हैं बच्चे की सारी जिम्मेदारियाँ निभाना। ये सफर में बच्चे की जरुरत की सारी चीजें याद रखती हैं। फिर वह दूध हो, बोतल हो, झुनझुना हो या लंगोट सब अपने बैग में भरती हैं। जहाँ सब सफर का आनन्द ले रहे होते हैं, रात में चैन की नींद सो रहे होते हैं ये–

सारी रात सुखाती रही बच्चे की लंगोट नैपकिन
खिड़कियों पर बाँध–बाँध कर

ये औरतें वाकई बहुत कमाल की हैं अपने सारे सपनों को भूल कर, अपनी भीगती आँखो को पोंछ कर बस चली जाती है और हम कहते हैं–

और तुम कहते हो
कमाल की औरतें हैं––––
ना सोती हैं
ना सोने देती हैं
रात भर ना जाने क्या–क्या खटपटाती हैं।[११]

ये औरतें ही हैं जो कभी माँ, कभी पत्नी, कभी प्रेमिका, कभी मित्र की भूमिका में सहजता से सेट हो जाती हैं। वरना इतनी भूमिकाएँ तो बड़े–बड़े अदाकार भी पूरे सधे तरीके से नहीं कर पाते। शादी के तुरन्त बाद घर की कई जिम्मेदारियाँ लड़की पर आ जाती है। वह धीरे–धीरे निभाना भी सीख जाती है। फिर जब माँ बनती हैं तो उसकी जिम्मेदारियाँ दोहरी हो जाती हैं। सबके कामों को करते–करते इनकी खुद की इच्छाएँ, सपने कब पीछे छुट जाते हैं इन्हें खुद पता नहीं चलता। पति का चाय–नाश्ता, बच्चों का स्कूल बैग, टिफिन–बनाते भरते निकल जाती है आधी जिन्दगी। फिर भी हम उसके काम को तरजीह नहीं देते–

ये छोटे बेटे के पीछे पंख सी भागती हैं
कि छूटती है बस स्कूल की

"तुम हमेशा टिफिन बनाने में देर कर देती हो मम्मा"
इनके हाथों में लगा नमक
इनकी आँखो में पड़ जाती हैं।[12]

रात को घड़ी का अलार्म लगा कर भी पूरी रात बैचेन रहती हैं। आधी चादर ओढ. कर सोती हैं, अल सुबह लड़खड़ाती उठती हैं और लग जाती है काम में और हम, जरा देर हो जाए चाय में तो कह उठते हैं–

ये उठती हैं तो दीवार से टिक जाती हैं
संभलती है, चलती है, पहुँचती है गैस तक
खटाक की आवाज के साथ
जल जाती हैं
और तुम कहते हो
कमाल की औरतें हैं
चाय बनाने में इतनी देर लगाती हैं।[13]

यें औरतें ही हैं जो अपनी खराब तबीयत को टालती रहती हैं, अपनी परेशानियों को पालती हैं पर कहती नहीं। इनका ध्यान हर छोटी चीजों पर रहता है जैसे– खाना, कपड़े, घर की सफाई, बीमार की दवाई आदि सब का हिसाब दिमाग में रहता है। पर कुछ स्थूल चीजों पर नही जाता इनका ध्यान जैसे–

जैसे अपना मन अपने सपने
अपनी बातें अपने दुख–दर्द
ये इन सबको घर के कूड़े–कचरे के साथ
बाहर वाले घूरे पर डाल आती हैं।[14]

अपने सपनों को अपने दुःखों को भूल कर औरतें हमेशा दूसरो के लिए समर्पित होती हैं। चढ़ती जवानी में जहाँ सब अपने सपनों को पूरा करने का प्रयास करते हैं, वहाँ ये घर की जिम्मेदारियाँ उठाती हैं। अपने जीवन के सबसे सुन्दर समय में जब सभी अपने सपनों में रंग भरते हैं ये बच्चे जनती हैं उनकी परवरिश करती हैं। "स्त्री यह समझने की आदी हो जाती है कि उसकी जिदंगी अर्द्धांगिनी होने में ही है।"[15] घर और बच्चे पालने में, सब तो आगे बढ़ जाते हैं ये वहीं घर की घर में रह जाती हैं। इनकी डायरी में लिखी पहली कविता, पहली बार दौड़ में जीती ट्राफी को कभी भूल नहीं पाती। ये औरतें नहीं भूलती अपनी गुड़िया अपनी खेल। लेकिन जब अपने बच्चों को खेलता देखती हैं तो अपने बचपन को दोहराती है, अपनी गुड़िया की हँसी देख खुद को बिसार जाती है। सब ठीक लगता है लेकिन सवाल एक ही चुभता है जब कोई पूछ ले क्या करती हो और तुम कहती हो–

"मैं बस हाउस वाइफ हूँ"
उक्त वक्त में चीख कर बताना चाहती हूँ–
कि तुम सबकी संतुष्ट डकार के लिए
रसोई में कितना मिटी हूँ मैं
एक पैर पर खड़ी

जुटाती रही छप्पन रंग
कि तुम्हारी तरक्की के सपनों को मिले
नया आकाश।[१६]

अपने दर्द को भूला कर अपने सपनों को छोड़ कर जो दिन भर तुम्हारे लिए दौड़ती है, उसके लिए कितनी आसानी से कह देते हो तुम –

कमाल की औरतें हैं
दिन भर घर में पड़ी रहती हैं
खाती हैं, मोटाती हैं
शाम को बेहोश पसर जाती हैं
ना कहीं आती हैं ना जाती हैं।[१७]

ये औरतें वाकई कमाल की हैं। इन्हें कानों से कम सुनाई देता है पर ये सुन लेती हैं तुम्हारी भूख, पहचान जाती हैं झट से तुम्हारी प्यास को। तुम्हारी चाल से पता कर लेती हैं तुम्हारी थकान का और कह देती हैं सो जाओ, थोड़ा आराम कर लो। ये कम सुनने वाली औरतें ही हैं, जिन्होंने तुम को जन्म दिया है –

कम सुनने वाली औरतों ने जना था तुम्हें
बेहोश हालत में सुन लिया था तुम्हारा पहला रोना
तुम्हें याद है आखिरी बार तुमने कब सुना था इन्हें।

औरत अपने आप को घर–परिवार में इतना डुबा देती है कि उन्हें अपने अलग अस्तित्व का भान ही नहीं रहता है। औरतों को बचपन से ही चुप रहना सिखाया जाता है। "औरतों के भीतर आज से नहीं बल्कि सैकड़ो सालों से घर के मर्दो का जो हौव्वा बैठा होता है उसका वे जोरदार विरोध नहीं दर्ज करा सकती।"[१८] यही कारण है कि वे चुपचाप अपनी जिन्दगी बिताती जाती हैं और हम अपने में ही मशगूल रहते हैं। हमें समय ही नहीं कि कभी उनके पास बैठे। वह क्या चाहती हैं कभी पूछ लें। लेकिन ये भी सच है कि वे अपने लिए कुछ चाहती भी कहाँ हैं, इसकी स्वतंत्रता शायद उनके पास है ही नहीं। राजकिशोर के शब्दों में–"स्त्री क्या चाहती है यह इसलिए स्पष्ट नहीं हो पाया है क्योंकि अपनी मर्जी से चाहने की छूट उसके लिए सर्वथा अपरिचित अनुभव है।"[१९] हम सब अपने–अपने कामों में इतना व्यस्त हैं कि कभी याद नहीं आता कुछ पल इन्हें सुना हो, इनसे कुछ पूछा हो, कुछ बताया हो। ये वही औरतें हैं जो कभी–

औरतें तुम्हारी ही माँ थी, बहन थी
कभी पत्नी थी, एक औरत थी
जो आँख से सुनती रहीं, समझती रहीं
आँख मूंद चुपचाप चली गई
ये कमाल की औरतें ––––––
आँख भर सोखती रहीं तुम्हारी आवाज
तुम कान भर भी ना सुन सके।[२०]

शैलजा पाठक औरतों की कई ऐसी खूबियाँ बताती हैं, जिन पर अक्सर हमारा ध्यान नहीं जाता।

वह औरतों के बचपन, जवानी और बुढापे को गौर से देखती हैं और बताती हैं कि वे क्या–क्या खोती और पाती चली जाती हैं। शैलजा पाठक की कविताएँ एक मर्दवादी सोच को चुनौती देती हैं। शैलजा की कविताएँ यह चाहती हैं कि औरतें स्वयं को पहचाने।

संदर्भ

१. नन्दा, वर्तिका; (२०१२), थी. हूँ.. रहूँगी..., राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ॰ ७
२. पाठक, शैलजा; (२०१५), मै. एक देह हूँ, फिर देहरी, पायताने बैठकर, बोधि प्रकाशन, जयपुर, पृ॰ ६
३. वही, पृ० १५
४. वही, पृ॰ १७
५. वही, पृ॰ २१
६. पुष्पा, मैत्रेयी, (२०१४), आवाज, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ ११
७. पाठक, शैलजा; (२०१५), मै एक देह हूँ, फिर देहरी, कमाल की औरतें, बोधि प्रकाशन, जयपुर, पृ॰ २७
८. वही, पृ॰ २८
९. अनामिका, (२०१२), स्त्री मुक्तिः साझा चूल्हा, किस चिड़िया का नाम है स्त्री–विमर्श? नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, पृ॰ १५
१०. पाठक, शैलजा; (२०१५) मै. एक देह हूँ, फिर देहरी, पायताने बैठकर, बोधि प्रकाशन, जयपुर, पृ॰ ३०
११. वही, पृ॰ ३१
१२. वही, पृ॰ ३३
१३. वही, पृ॰ ३१
१४. वही, पृ॰ ३८
१५. अरोड़ा, सुधा, (२०११), एक औरत : तीन बटा चार, छोटे आकार में महागाथा, सुधा अरोड़ा की कहानियाँ, बोधि प्रकाशन, जयपुर, पृ॰ ८
१६. पाठक, शैलजा, (२०१५), मै एक देह हूँ, फिर देहरी, पायताने बैठकर, बोधि प्रकाशन, जयपुर, पृ॰ ३६
१७. वही, पृ॰ ४०
१८. पुष्पा, मैत्रेयी, (२०१४), आवाज, सामयिक प्रकाशन, नईदिल्ली, पृ॰ १७
१९. किशोर, राज; (२०१७), स्त्री के लिए जगह, वाणी प्रकाशन, नईदिल्ली, पृ० ०५
२०. पाठक, शैलजा; (२०१५), मैं एक देह हूँ, बोधि प्रकाशन, जयपुर, पृ० ४६